क. **विधान करनेवाला**

- परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उसने अपनी प्रजा के लोगों के दुःख को निश्चय देखा है और उनकी चिल्लाहट को सुना है (पद्य ७)
- परमेश्वर ने मूसा को मिस्र से इस्राएल को निकालने के लिए नियुक्त किया (पद्य १०)। वे खाली हाथ मिस्र से बाहर नहीं निकलेंगे। मिस्र उन सभी कामों के लिए इस्राएलियों को भुगतान करेगा जो उन्होंने दास के रूप में किए थे पद्य २१)।
- कनान के रास्ते में, परमेश्वर ने पूर्व दासों से एक राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया। उसने उन्हें उचित नियम दिए जो पूरी दुनिया के लिए एक आशीर्वाद हो सकते हैं। इसलिए, उसने उन्हें सिनै पर्वत पर बुलाया।.

ख. **दस आज्ञाएँ**

- दस आज्ञाएँ इस्राएल के लोगों का संविधान थीं। यह सर्वोच्च नियम थे जिनमें से अन्य सभी नियम प्राप्त होते हैं।
- आज्ञाओं को पूरा करना ईश्वर के प्रति हमारे प्रेम की निशानी है (प्रथम ४; व्यवस्थाविवरण ६: ५; मत्ती २२: ३७-३८) और हमारे पड़ोसी के प्रति भी (अंतिम ६; लैव्यव्यवस्था १९:१८; मत्ती २२:३९)।
- हमें अपने कार्य और अपने इरादों के साथ-साथ (मत्ती ५: २१-३०) आज्ञाओं को भी पूरा करना चाहिए।

ग. **सुरक्षात्मक नियम**

- निर्गमन में तीन अध्याय हैं (२१-२३) जिनमें विभिन्न प्रकार के नियम शामिल हैं:
  - गुलामी के नियम (२१:२-११)
  - हिंसक अपराधों के नियम (२१:१२-३६)
  - संपत्ति के नियम (२२:१-१५)
  - दैनिक जीवन के नियम (२२:१६-३१)
  - इन नियमों को कैसे लागू किया जाए (२३:१-९)
- जो कमजोर हैं (दास, विदेशी, विधवा और अनाथ) की देखभाल करना इन नियमों में महत्वपूर्ण है।

घ. **दूसरा दशमांश**

- व्यवस्थाविवरण १४: २२-२९ बताता है कि इस्राएलियों को पहले से अलग उद्देश्य से दूसरा दशमांश देना था।
- दो वर्षों के लिए, यह दूसरा दशमांश यरूशलेम ले जाया गया था। उन्होंने इसका कुछ हिस्सा परिवार में उपयोग किया और बाकि जरूरतमंद लोगों के साथ साझा किया। तीसरे वर्ष, यह विशेष दशमांश प्रत्येक शहर में "स्थानीय" जरूरतमंदों के साथ साझा किया गया।

ङ. **पचासवीं वर्षगांठ (जुबली)**

- जुबली भूमि की मुक्ति का वर्ष था। सब को जुबली में अपनी विरासत वापस मिल जाती थी।
- इस तरह, कोई भी बड़ी सम्पदा को एकत्र नहीं कर सकता था। इसके अलावा, परिवारों को अपनी जमीन-अपनी आजीविका-हमेशा के लिए नहीं खोनी पड़ती थी।
- पाप के कारण गरीब लोग हमेशा रहेंगे (मत्ती २६:११)। जुबली सामाजिक असमानता को कम करने के लिए परमेश्वर का प्रस्तावित समाधान था।